108 कुंडीय रुद्र महामृत्युंजय महायज्ञ

चर्चा में क्यों?

केंद्रीय गृह मंत्री ने राजस्थान के **कोटपुतली में 108 कुंडीय रुद्र महामृत्युंजय महायज्ञ** की महापूर्णाहुति एवं सनातन सम्मेलन में भाग लिया।

मुख्य बिंदु

- **महायज्ञ के बारे में:**
  - **बाबा नस्तीनाथ** द्वारा एक साल तक चलाए गए महायज्ञ का मुख्य उद्देश्य **समाज के हर वर्ग को जोड़ना और समाज में धार्मिक जागरूकता फैलाना** था।
  - **आध्यात्मिक और जीवनदृष्टि के सिद्धांत:**
  - केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने **बाबा नस्तीनाथ** द्वारा अपनाए गए **चार सिद्धांतों—सत्य, तपस्या, वैराग्य और सेवा** की सराहना की। इन सिद्धांतों को जीवन का आधार बनाने के लिये प्रोत्साहित किया गया।
  - ये किसी व्यक्ति के आत्मा की शुद्धि, अपने जीवन को धर्ममय बनाने और संसार की सेवा करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं।
  - इसके अलावा, बाबा नस्तीनाथ द्वारा प्रकृति की सेवा और पशु-पक्षियों की देखभाल पर भी ज़ोर दिया गया।
- **नाथ संप्रदाय का महत्त्व:**
  - केंद्रीय गृह मंत्री ने **सनातन धर्म** को सशक्त करने में **नाथ संप्रदाय** के योगदान का उल्लेख करते हुए बताया कि महाप्रभु आदिनाथ से लेकर 9 गुरुओं और उनके बाद आने वाले ऊर्जा के वाहकों ने सनातन धर्म को शक्ति दी।
  - उन्होंने यह भी कहा कि नाथ संप्रदाय में धूनि को आत्मज्ञान प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम माना गया है, जो **पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु** के तत्त्वों को मिलाकर संतुलन और ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया है।

नाथ संप्रदाय

- नाथ संप्रदाय एक प्रमुख हिंदू धार्मिक पंथ है, जो मध्यकाल में उत्पन्न हुआ और जिसमें **शैव, बौद्ध तथा योग की** परंपराओं का अद्वितीय समन्वय देखने को मिलता है।
- यह पंथ विशेष रूप से हठयोग की साधना पद्धति पर आधारित है, जो आत्मा के उच्चतम अनुभव और शारीरिक नियंत्रण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।
- इस पंथ के प्रवर्तक **मत्स्येंद्रनाथ** माने जाते हैं, जो 9वीं सदी के एक महान भारतीय योगी और ऋषि थे।
- मत्स्येंद्रनाथ ने नाथ पंथ की नींव रखी और इसे शैव परंपरा के भीतर एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिलवाया।
- उनके योगदान के कारण ही नाथ पंथ को व्यापक पहचान मिली और यह भारत और नेपाल में एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक परंपरा बन गया।
- इसके अतिरिक्त, मत्स्येंद्रनाथ को **तिब्बती बौद्ध धर्म** में भी एक महासिद्ध के रूप में सम्मानित किया गया।
- **गोरखनाथ**, जो 10वीं सदी के एक महान गुरु थे, मत्स्येंद्रनाथ के शिष्य थे।
- गोरखनाथ ने नाथ पंथ को और अधिक विकसित किया और इसे भारत के विभिन्न हिस्सों में लोकप्रिय बनाया। गोरखनाथ को **हठयोग** का संस्थापक भी माना जाता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/108-kundiya-rudra-maha-mrityunjay-maha-yagya